

रविवार 26 मई, 2024

विषय — आत्मा और शरीर

स्वर्ण पाठ: रोमियो 13: 1

"हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर स न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं।"

उत्तरदायी अध्ययन: मत्ती 16: 21-26

- ²¹ उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, कि मुझे अवश्य है, कि यरूशलेम को जाऊं, और पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुख उठाऊं; और मार डाला जाऊं; और तीसरे दिन जी उठूं।
- ²² इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा कि हे प्रभु, परमेश्वर न करे; तुझ पर ऐसा कभी न होगा।
- ²³ उस ने फिरकर पतरस से कहा, हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो: तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।
- ²⁴ तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।
- ²⁵ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।
- ²⁶ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 16: 5-11

- ⁵ यहोवा मेरा भाग और मेरे कटोरे का हिस्सा है; मेरे बाट को तू स्थिर रखता है।
- ⁶ मेरे लिये माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी, और मेरा भाग मनभावना है॥
- ⁷ मैं यहोवा को धन्य कहता हूं, क्योंकि उसने मुझे सम्मति दी है; वरन मेरा मन भी रात में मुझे शिक्षा देता है।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 8 मैं ने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है: इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है मैं कभी न डगमगाऊंगा॥
- 9 इस कारण मेरा हृदय आनन्दित और मेरी आत्मा मगन हुई; मेरा शरीर भी चैन से रहेगा।
- 10 क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा॥
- 11 तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है॥

2. उत्पत्ति 32: 3, 6-11, 13, 24-30

- 3 तब याकूब ने सेईर देश में, अर्थात् एदोम देश में, अपने भाई ऐसाव के पास अपने आगे दूत भेज दिए।
- 6 वे दूत याकूब के पास लौट के कहने लगे, हम तेरे भाई ऐसाव के पास गए थे, और वह भी तुझ से भेंट करने को चार सौ पुरुष संग लिये हुए चला आता है।
- 7 तब याकूब निपट डर गया, और संकट में पड़ा: और यह सोच कर, अपने संग वालों के, और भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों, और ऊंटों के भी अलग अलग दो दल कर लिये,
- 8 कि यदि ऐसाव आकर पहिले दल को मारने लगे, तो दूसरा दल भाग कर बच जाएगा।
- 9 फिर याकूब ने कहा, हे यहोवा, हे मेरे दादा इब्राहीम के परमेश्वर, तू ने तो मुझ से कहा, कि अपने देश और जन्म भूमि में लौट जा, और मैं तेरी भलाई करूंगा:
- 10 तू ने जो जो काम अपनी करुणा और सच्चाई से अपने दास के साथ किए हैं, कि मैं जो अपनी छड़ी ही ले कर इस यरदन नदी के पार उतर आया, सो अब मेरे दो दल हो गए हैं, तेरे ऐसे ऐसे कामों में से मैं एक के भी योग्य तो नहीं हूं।
- 11 मेरी विनती सुन कर मुझे मेरे भाई ऐसाव के हाथ से बचा: मैं तो उससे डरता हूं, कहीं ऐसा ने हो कि वह आकर मुझे और मां समेत लड़कों को भी मार डाले।
- 13 और उसने उस दिन की रात वहीं बिताई; और जो कुछ उसके पास था उस में से अपने भाई ऐसाव की भेंट के लिये छांट छांट कर निकाला।
- 24 और याकूब आप अकेला रह गया; तब कोई पुरुष आकर पह फटने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा।
- 25 जब उसने देखा, कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता, तब उसकी जांघ की नस को छूआ; सो याकूब की जांघ की नस उससे मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई।
- 26 तब उसने कहा, मुझे जाने दे, क्योंकि भोर हुआ चाहता है; याकूब ने कहा जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा।
- 27 और उसने याकूब से पूछा, तेरा नाम क्या है? उसने कहा याकूब।
- 28 उसने कहा तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध कर के प्रबल हुआ है।

- ²⁹ याकूब ने कहा, मैं बिनती करता हूं, मुझे अपना नाम बता। उसने कहा, तू मेरा नाम क्यों पूछता है? तब उसने उसको वहीं आशीर्वाद दिया।
- ³⁰ तब याकूब ने यह कह कर उस स्थान का नाम पनीएल रखा: कि परमेश्वर को आम्हने साम्हने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है।

3. उत्पत्ति 33: 1 (से 1st.), 3, 4

- ¹ और याकूब ने आंखें उठा कर यह देखा, कि ऐसाव चार सौ पुरुष संग लिये हुए चला जाता है।
- ³ और आप उन सब के आगे बढ़ा, और सात बार भूमि पर गिर के दण्डवत की, और अपने भाई के पास पहुंचा।
- ⁴ तब ऐसाव उससे भेंट करने को दौड़ा, और उसको हृदय से लगा कर, गले से लिपट कर चूमा: फिर वे दोनों रो पड़े।

4. विलाप 3: 22-25

- ²² हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरुणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है।
- ²³ प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान है।
- ²⁴ मेरे मन ने कहा, यहोवा मेरा भाग है, इस कारण मैं उस में आशा रखूंगा।
- ²⁵ जो यहोवा की बाट जोहते और उसके पास जाते हैं, उनके लिये यहोवा भला है।

5. यशायाह 55: 1-3

- ¹ अहो सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ; और जिनके पास रूपया न हो, तुम भी आकर मोल लो और खाओ! दाखमधु और दूध बिन रूपए और बिना दाम ही आकर ले लो।
- ² जो भोजनवस्तु नहीं है, उसके लिये तुम क्यों रूपया लगाते हो, और, जिस से पेट नहीं भरता उसके लिये क्यों परिश्रम करते हो? मेरी ओर मन लगाकर सुनो, तब उत्तम वस्तुएं खाने पाओगे और चिकनी चिकनी वस्तुएं खाकर सन्तुष्ट हो जाओगे।
- ³ कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे; और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा अर्थात् दाऊद पर की अटल करुणा की वाचा।

6. यशायाह 58: 6-8, 10, 11

- ⁶ जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं, वह क्या यह नहीं, कि, अन्याय से बनाए हुए दासों, और अन्धेर सहने वालों का जुआ तोड़कर उन को छुड़ा लेना, और, सब जुओं को टूकड़े टूकड़े कर देना?

- 7 क्या वह यह नहीं है कि अपनी रोटी भूखों को बांट देना, अनाथ और मारे मारे फिरते हुआओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहिनाना, और अपने जातिभाइयों से अपने को न छिपाना?
- 8 तब तेरा प्रकाश पौ फटने की नाई चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरा धर्म तेरे आगे आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा।
- 10 उदारता से भूखे की सहायता करे और दीन दुःखियों को सन्तुष्ट करे, तब अन्धियारे में तेरा प्रकाश चमकेगा, और तेरा घोर अन्धकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा।
- 11 और यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और काल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा; और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता।

7. 1 थिस्सलुनीकियों 5: 23 (मैं)

- 23 और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 335: 16 (भगवान)-20

भगवान और आत्मा एक हैं, और यह एक सीमित दिमाग या एक सीमित शरीर में कभी भी शामिल नहीं है। आत्मा शाश्वत है, दिव्य है। आत्मा, प्राण के अलावा कुछ भी जीवन को विकसित नहीं कर सकता, क्योंकि आत्मा सबसे बढ़कर है।

2. 307: 25 (वह)-30

दिव्य मन मनुष्य की आत्मा है, और यह मनुष्य को सभी चीजों पर प्रभुत्व प्रदान करता है। मनुष्य को भौतिक आधार से नहीं बनाया गया था, न ही उन भौतिक कानूनों का पालन करने पर प्रतिबंध लगाया गया है जो आत्मा ने कभी नहीं बनाए; उनका प्रांत मन की उच्च विधि में आध्यात्मिक विधियों में है।

3. 482: 3-12

मानव विचार ने आत्मा शब्द के अर्थ को इस परिकल्पना के माध्यम से मिला दिया है कि आत्मा एक दुष्ट और अच्छी बुद्धि दोनों है, पदार्थ में निवास करती है। शब्द देवता का उचित उपयोग हमेशा ईश्वर शब्द को प्रतिस्थापित करके प्राप्त किया जा सकता है, जहां बहुत अधिक अर्थ की आवश्यकता होती है। अन्य मामलों में, शब्द का

उपयोग करें, और आपके पास वैज्ञानिक संकेत होगा। क्राइस्टियन साइंस में इस्तेमाल के रूप में, जीवात्मा आत्मा या ईश्वर का पर्याय है; लेकिन विज्ञान से बाहर, जीवात्मा भौतिक अनुभूति के साथ समान है।

4. 280: 25-5

ठीक से समझा, एक भावुक सामग्री के रूप में रखने के बजाय, मनुष्य के पास एक संवेदनाहीन शरीर है; और ईश्वर, मनुष्य की आत्मा और सभी अस्तित्व की, अपने स्वयं के व्यक्तित्व, सद्भाव, और अमरता में सदा रहने वाले, मनुष्य में इन गुणों को लागू करते हैं, - मन के माध्यम से, कोई बात नहीं। मानवीय मतों का मनोरंजन करने और विज्ञान होने को अस्वीकार करने का एकमात्र बहाना हमारी आत्मा का नश्वर अज्ञान है, - अज्ञान जो केवल दिव्य विज्ञान की समझ के लिए उपजता है, वह समझ जिसके द्वारा हम पृथ्वी पर सत्य के राज्य में प्रवेश करते हैं और सीखते हैं कि आत्मा अनंत और सर्वोच्च। आत्मा और सामग्री प्रकाश और अंधेरे से अधिक नहीं है।

5. 308: 14-16 अगला पृष्ठ

आत्मा से प्रेरित पितृपुरुषों ने सत्य की आवाज सुनी, और भगवान के साथ सचेत रूप से बात की जैसे कि आदमी आदमी के साथ बात करता है।

जैकब अकेला था, त्रुटि के साथ कुशती, - जीवन, पदार्थ और बुद्धिमत्ता की एक नश्वर भावना से जूझते हुए, अपने झूठे सुख और पीड़ा के साथ अस्तित्व के रूप में, - जब एक दूत, सत्य और प्रेम का एक संदेश, उसे दिखाई दिया और मुस्कराया पाप, या शक्ति, उसकी त्रुटि की, जब तक कि उसने इसकी असत्यता को नहीं देखा; और सत्य, इस प्रकार समझा जा रहा है, उसे दिव्य विज्ञान के इस पेनेल में आध्यात्मिक शक्ति प्रदान की। तब आध्यात्मिक प्रचारक ने कहा: "मुझे जाने दे, क्योंकि भोर हुआ चाहता है;" मतलब, सत्य और प्रेम का प्रकाश तुम्हारे ऊपर है। लेकिन पितृसत्ता, उनकी त्रुटि और उनकी मदद की आवश्यकता को मानते हुए, इस शानदार प्रकाश पर अपनी पकड़ तब तक ढीली नहीं की जब तक कि उनका स्वभाव बदल नहीं गया। जब जैकब से पूछा गया, "तुम्हारा नाम क्या है?" उसने सीधा उत्तर दिया; और फिर उसका नाम बदलकर इज़राइल कर दिया गया, क्योंकि "एक राजकुमार के रूप में"; "उसने भगवान और मनुष्यों के खिलाफ लड़ाई लड़ी" और जीत हासिल की। तब याकूब ने अपने छुड़ानेवाले से पूछा, तेरा नाम क्या है? लेकिन इस प्रश्न को रोक दिया गया, क्योंकि संदेशवाहक कोई साकार प्राणी नहीं था, बल्कि मनुष्य को दैवीय प्रेम का एक अनाम, निराकार वितरण था, जिसने, भजनकार के शब्दों में, उसकी आत्मा को पुनर्स्थापित किया, - उसे होने का आध्यात्मिक एहसास दिया और उसकी भौतिक समझ को धिक्कारा।

इस प्रकार जैकब के संघर्ष का परिणाम सामने आया। उन्होंने आत्मा की आध्यात्मिक शक्ति और आध्यात्मिक शक्ति के साथ भौतिक त्रुटि पर विजय प्राप्त की थी। इससे आदमी बदल गया। उन्हें अब याकूब नहीं कहा जाता था, लेकिन इज़राइल, - भगवान का एक राजकुमार, या भगवान का एक सैनिक, जिसने एक अच्छी लड़ाई लड़ी थी। उन्हें उन लोगों का पिता बनना था, जिन्होंने ईमानदारी से प्रयास करके भौतिक इंद्रियों पर आत्मा की शक्ति

के प्रदर्शन का अनुसरण किया; और पृथ्वी के बच्चे जिन्होंने उसके उदाहरण का अनुसरण किया, उन्हें इज़राइल के बच्चे कहा जाना चाहिए, जब तक कि मसीहा उनका नाम नहीं बदल देता।

6. 216: 11-21

यह समझ कि अहंकार मन है, और यह कि एक मन या बुद्धि है, एक बार में नश्वर अर्थ की त्रुटियों को नष्ट करने और अमर भावना की सच्चाई की आपूर्ति करने के लिए शुरू होता है। यह समझ शरीर को सामंजस्यपूर्ण बनाती है; यह तंत्रिकाओं, हड्डियों, मस्तिष्क इत्यादि को नौकरों के बजाय नौकर बनाता है। यदि मनुष्य दिव्य मन के नियम से संचालित होता है, तो उसका शरीर हमेशा की ज़िंदगी और सच्चाई और प्रेम को प्रस्तुत करने में है। मनुष्यों की महान गलती यह है कि उस आदमी को, भगवान की छवि और समानता को मानने के लिए, भौतिक और आत्मा दोनों अच्छाई और बुराई दोनों हैं।

7. 60: 29-6

आत्मा के पास आत्मा को प्राप्त करने के लिए अनंत संसाधन हैं, और खुशी अधिक आसानी से प्राप्त की जाएगी और हमारे रखने में अधिक सुरक्षित होगी, अगर आत्मा में मांग की जाए। अकेले उच्च आनंद अमर आदमी के लालसा को संतुष्ट कर सकते हैं। हम व्यक्तिगत समझदारी की सीमा के भीतर खुशी का संचार नहीं कर सकते। इंद्रियां वास्तविक आनंद नहीं देती हैं।

मानव के हित में अच्छाई बुराई पर अध्यात्म और पशु पर आधिपत्य होना चाहिए, या सुख कभी नहीं जीता जाएगा।

8. 62: 27-1

मनुष्य की उच्चतर प्रकृति निम्न द्वारा शासित नहीं होती; यदि ऐसा होता, तो ज्ञान का क्रम उलट जाता। जीवन के बारे में हमारे झूठे विचार शाश्वत सद्भाव को छिपाते हैं, और उन बुराइयों को जन्म देते हैं जिनकी हम शिकायत करते हैं। चूंकि नश्वर लोग भौतिक नियमों में विश्वास करते हैं और मन के विज्ञान को अस्वीकार करते हैं, इसलिए यह भौतिकता को पहले और आत्मा के श्रेष्ठ नियम को अंतिम नहीं बनाता है।

9. 119: 25-6

सूर्योदय को देखने में, कोई पाता है कि यह इंद्रियों के सामने सबूतों का खंडन करता है कि यह विश्वास है कि पृथ्वी गति में है और सूर्य आराम के लिए है। चूंकि खगोल विज्ञान सौर प्रणाली के आंदोलन की मानवीय धारणा को उलट देता है, इसलिए ईसाई विज्ञान आत्मा और शरीर के प्रतीत होने वाले संबंध को उलट देता है और शरीर को मन की सहायक बनाता है। इस प्रकार यह मनुष्य के साथ है, जो संयमशील मन का विनम्र सेवक है, हालांकि यह समझदारी को अन्यथा प्रकट करता है। लेकिन हम इसे कभी नहीं समझेंगे जबकि हम स्वीकार करते हैं कि आत्मा

शरीर या मन में है, और वह आदमी गैर-बुद्धि में शामिल है। आत्मा या आत्मा, ईश्वर, अपरिवर्तनीय और शाश्वत है; और मनुष्य आत्मा, ईश्वर के साथ सह-अस्तित्व रखता है, क्योंकि मनुष्य ईश्वर की छवि है।

10. 125: 12-16

जैसे-जैसे मानव विचार एक अवस्था से दूसरे चरण में बदलता है, दर्द और दर्द रहितता, दुःख और आनन्द, - भय से आशा और विश्वास से समझ तक, - दृश्य अभिव्यक्ति अंतिम रूप से मनुष्य द्वारा शासित होगी, भौतिक अर्थ से नहीं।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6